स्त्री विमर्श : हिंदी साहित्य में महिलाओं का चित्रण

प्रस्तुत कर्ता : डॉ. महादेवी गुरव के .एल . ई. संस्था के जी. आय . बागेवाडी कॉलेज निपानी। (राज्य कर्नाटक)8317425531

"कहे सावित्री
सोचो समझो विचार करो तुम,
विवेक से विचार करो,
अपनी जीवन दृष्टि दुरुस्त करो
जीवन अपना सार्थक करो।" 1

इस तरह हमारे देश की महान "ज्ञान ज्योति "सावित्रीबाई फुले जी ने अपनी कविता "मन्नत" में इन पंक्तियों को वह अभिव्यक्त करती है ।, स्त्रियों को अंधविश्वास और अंधभक्त के प्रति सचेत करती हुई कहती है कि स्त्री यों कों तर्क वितर्क के लिए तैयार करती है तब इन उदगारों को वह कहती है, क्योंकि" शिक्षा ही वह कारगर" माध्यम है जहांँ व्यक्ति आत्म मूल्यांकन की क्षमता का विकास करता है। उसके भीतर चेतना आती है विकास की इस प्रक्रिया से आत्म सम्मान एवं अधिकार दिशा की चेतना से लैस करती है। इसलिए सावित्रीबाई का कहना है कि, समस्त नारी जाति को सम्मान से जीने के लिए "शिक्षा "बहुत आवश्यक है। सावित्रीबाई पहले जन संबोधन के माध्यम से लोगों को संकल्प और संघर्ष के लिए तैयार करती है। उन्हें शिक्षित होने एवं शिक्षित करने के लिए प्रेरित करती है। ताकि सदियों पुरानी रूढ मानसिकता की गुलामी को तोड़ सके वह कहती है। "बाल बच्चों को पढ़ाये खुद भी पढे" 2 औरत ,दुनिया में एक महान शक्ति है महान विभूति है। इसलिए एक विद्वानों ने औरतों के "स्त्री विमर्श "पर यह उदगार निकालते हैं कि। "औरतें एक साथ कई भूमिकाओं से लैस है, वह पत्नी, बेटी ,बहन ,बहू ,लेखिका, कहानीकार, कवियत्री, आलोचक चित्रकार ,बावर्ची, प्रबंधक, और न जाने क्या-क्या है ,ऐसी स्थिति में उनके अंदर का नारीवाद और बलिष्ठ होता है कमजोर नहीं"3

स्त्री विमर्श :--

यह एक नवीन अवधारणा है जिसके अंतर्गत किसी विषय का समग्रता से मूल्यांकन किया जाता है "विमर्श पद" को चर्चा करते हुए "अजीत वडनेकर" लिखते हैं कि, - "आमतौर पर विमर्श उसे कहते हैं कि किसी खास बिंदु का सम्यक दृष्टि से परीक्षण उसी पर तर्क वितर्क के साथ भली भाँति सोच विचार आदि।" 4

"स्त्री विमर्श " से संबंधित सवालों संघर्षों एवं संभावनाओं को रेखांकित करती हुई संपादकीय लेख "अभी सूर्य मध्यान्ह काल में नहीं आया है परंतु आएगा जरूर" --में "स्वाति रवेता " लिखती है -"भारतीय स्त्री एक पिछड़े हुए समाज और अगड़े समाज दोनों के प्रश्नों के बीच जूझ रही है ।इन्हीं प्रश्नों के बीच महिला मुक्ति, नई चेतना, तथा उससे संबंधित अनेक प्रश्न उठे, बहुत सारे आयोग बने, कानून बदले गए और नए कानून आज तक गड़े जा रहे हैं। वन्य पशु स्वतंत्र है। अपने जीवन को लेकर फिर मनुष्य ने यह कब और कैसे निश्चित कर लिया कि स्त्री स्वतंत्रता की हकदार नहीं है कब से यह निश्चित हो गया कि स्त्री दोयम है। उसे देवी बनाकर पूजा तो जा सकता है पर मानवीय अधिकारों से उसे दूर रखना चाहिए। 5 इन सब का मूल कारण "अशिक्षा "मानते हैं ।अज्ञानता को मानते हैं। वह "अज्ञानता "शीर्षक कविता में सावित्रीबाई कहती है -

"एक ही दुश्मन अपना
रवदेड दे उसे, हम सब मिलकर
उससे ज्यादा खतरनाक ना कोई ,
खोजो खोजो मन के भीतर झांकों "
चलो चलो मैं बताती हूँ,
उस दुष्ट खतरनाक दुश्मन की पहचान
ध्यान से सुनो उस दुश्मन का नाम
उस दुश्मन को कहते हैं" अज्ञानता । "6

इस प्रकार स्त्री की दयनिय स्थिति का मूल कारण अज्ञान ही है इस संदर्भ पर डाॅ .अमरनाथ लिरवते है कि -"भारत की आरंभिक आंदोलन कर्ताओं में प्रमुरव थी", पंडिता रमाबाई" और "सावित्रीबाई फूले "दोनों ही 19वीं सदी के उत्तरार्ध में सक्रिय रही। पंडिता रमाबाई ने स्त्री के अधिकार के लिए संघर्ष किया ।हिंदू धर्म की रूढ़िवादिता पर आघात किया तथा 19 वी

शताब्दी के आठवें दशक में स्त्रियों की शिक्षा के लिए जो महत्वपूर्ण काम किया उनके लिए अलग से स्कूल खोला एक तरह उनको हम पहले भारतीय शिक्षिका कह सकते हैं।"7

1857 में सबसे प्रथम अमेरिका में महिलाओं और पुरुषों के समान वेतन पर हड़ताल हुई थी ।इसी दिन के बाद "अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस "के रूप विश्व भर में मनाने जाने का सिलसिला शुरू हो गया साथी विश्व भर में नारी मुक्ति आंदोलन की भी शुरुआत हो चुकी थी किंतु इसका मुख्य केंद्र अमेरिका को हम मानते है। नारी मुक्ति आंदोलन की शुरुआत के बाद 1908 में "वुमेन फ्रीडम लीग" की स्थापना ब्रिटेन में हुई जापान में इस आंदोलन की शुरुआत 1911 में हुई 1936 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित" मैडम क्यूरी" सहित "तीन महिलाएं फ्रांस में पहली बार मंत्री बनी" इस तरह विश्व के अनेक देशों में इस नारी मुक्ति के आंदोलन का प्रभाव दिखाई देने लगा 1951 में संयुक्त राष्ट्र के महासभा में बहुमत के रूप में राजनीतिक अधिकारियों का नियम के लिए पारित किया गया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारी मुक्ति के आंदोलन का प्रारंभ तभी से हम मानते हैं इस तरह अंतर्राष्ट्रीय महिला दिन के उपलक्ष में स्त्री विमर्श पर भी अनेक तरह के विचार विमर्श होने शुरू हो गए स्त्री स्वतंत्र पर, स्त्री अस्मिता पर ,स्त्री के अनेक पाबंदियों पर, नियम पर ,स्त्री के लिए लागू किए गए कानून पर स्त्री का जो समाज में द्वितीय स्थान है उस पर वेदों में प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत में इस नवजागरण के साथ आधुनिक काल के 19वीं शताब्दी में राजा राममोहन राय ने 1818 में "सती प्रथा" का जब विरोध किया इसका फल स्वरुप 1829 में "लॉर्ड विलियम बेंटिक" ने सती प्रथा को गैर कानून घोषित किया। बाल विवाह विधवा विवाह बहू पत्नी प्रथा के विरुद्ध भी उन्होंने राजाराम मोहन राय ने अपना सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तावित किया गया था। स्वामी विवेकानंद ,स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया था। इस प्रकार यह स्त्री मुक्ति का आंदोलन भारत में स्त्री जाति की चेतना का स्वर बन गया था। आज साहित्यिक दृष्टि से साहित्यिक स्त्री विमर्श पर अधिक जोर दिया गया स्त्री विमर्श के संबंध में यह विवाद का विषय रहा। स्त्री के लिए सुरक्षित लेखन होने के नाते पुरुष की भागीदारी की भी संभावना बनती है। पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है और नारी के लिए अनुभव ।जीवन का ऐसा सजीव चित्रण 20 सी सदी के उत्तरार्ध में अनेक हिंदी लेखिका ओंने स्त्री विमर्श के नाम पर लेखन कार्य किया। आज महिलाओं साहित्य से समाज में जो योगदान प्राप्त हुआ है धरती से लेकर आसमान में स्त्री अस्मिता सिधद कर चुकी है फिर भी स्त्री स्वतंत्रता की हकदार होने के लिए कितने अज्ञानी नारियों को तरसना पड रहा है व्यसनी पति को लेकर कितनी मजबूर नारी आज भी ससुराल में हो या माँ के घर में अकेली महिला कुछ करने लिए अपने नीजी हक के लिए विवश है। इस दौर में हिंदी के महिला साहित्यकारों ने अपने लेखन से मृदुला गरग, ममता कालिया , उषा प्रियंवदा मालती जोशी की कहानियों में महिला सशकतिकरण का चित्रण हमें देखने को मिलता है। जी सावित्रीबाई फूले की परंपरा आगे बढा रही है ।आज महिलाओं का साहित्य नारी जीवन के लिए प्रेरणा दायक है ।समाज में योगदान का दायित्व निभा रहा है नारी की पहचान ,महिमा, शक्ति ,तथा कार्य का सक्षम स्वरुप हम विभिन्न क्षेत्रों में विराजमान विजयी वारांगना प्रशासनिक विभाग में अन्य प्रसिद्धि प्राप्त महिलायें ही साक्ष के रूप में विद्यमान है। महिला उद्यमी ,जैसे " प्रभा खेतान" का उपन्यास "अन्या से अनन्या" उषा प्रियंवदा के कहानी दिव्य प्रेरक कहानीयाँ है ।कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा शिवानी ,चित्रा मुदगल, अमृता प्रीतम के उपन्यास कहानियों में महिला नेतृत्व गुण संपन्न का चित्रण देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1)तिलक रजनी संपादकीय - सावित्री बाई फूले रचना समग्र नई दिल्ली मारजिनालाइजड पब्लिकेशन 2017 पृष्ठ 57

2)तिलक रजनी संपादकीय - सावित्री बाई फूले रचना समग्र नई दिल्ली मारजिनालाइजड पब्लिकेशन 2017 पृष्ठ 12

3)श्वेता स्वाति संपादकीय युद्धरत आम आदमी पत्रिका वर्ष जनवरी मार्च 2019 पृष्ठ -6

4)वडनेकर अजित 'शब्दों का सफर' नई दिलली

राजकमल प्रकाशन 2019 पृष्ठ --402

5)श्वेता स्वाति संपादकीय युद्धरत आम आदमी पत्रिका वर्ष जनवरी मार्च 2019 पृष्ठ -6

6) तिलक रजनी संपादकीय - सावित्री बाई फूले रचना समग्र नई दिल्ली मारजिनालाइजड पब्लिकेशन 2017

पृष्ठ --77

7)डाॅ. अमरनाथ --हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शबदावली नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन 2020

पृष्ठ --386